केवलज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जैनदर्शन के अनुसार आत्मा स्वभावतः सर्वज्ञ है। जो मूर्त और अमूर्त सब द्रव्यों को सर्वथा, सर्वत्र और सर्वकाल में जानता देखता है, वह केवलज्ञान है। सकल प्रत्यक्ष को केवलज्ञान कहते हैं, क्योंकि वह असहाय होता है अर्थात् परनिरपेक्ष तथा एकाकी ही होता है। यह पूर्ण अतीन्द्रिय है। प्रत्यक्ष ज्ञान का प्रकार वह ज्ञान, जो समस्त द्रव्यों और समस्त पर्यायों को साक्षात् जानने में सामर्थ है। जो ज्ञान सर्वद्रव्य, सर्वक्षेत्र, सर्वकाल, और सर्वभाव को जानता देखता है, वह केवलज्ञान है। मोह का क्षय होने से तथा ज्ञानावरण दर्शनावरण व अन्तराय मोह का क्षय होने से केवलज्ञान प्रकट होता है।

यदि कहा जाय कि केवली आत्मा के एकप्रदेश से पदार्थों का ग्रहण करता है, तो यह भी कहना ठीक नहीं है। केवली आत्मा के सभी प्रदेशों में विद्यमान आवरण कर्म के निर्मूल विनाश हो जाने पर केवल उसके एक अवयव से पदार्थों का ग्रहण मानने में विरोध आता है। इसलिए प्राप्त और अप्राप्त सभी पदार्थों को युगपद अपने सभी अवयावों से केवली जानता है, यह सिद्ध हो जाता है। जो अप्रदेशी परमाणु और कालाणु को, सप्रदेशी जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यों को, मूर्तिक और अमूर्तिक को, अनागत तथा अतीत पर्यायों को जानता है, उसे अतीन्द्रिय ज्ञान कहते हैं। अर्थीजन जिसके लिए बाह्य और अभ्यान्तर तप के द्वारा मार्ग का केवल अर्थात् सेवन करते हैं वह केवलज्ञान कहलाता है। केवल ज्ञान एक ही प्रकार का है क्योंकि वह कर्म क्षय से उत्पन्न होने वाला है इसलिए इसके प्रकार नहीं है।

सब द्रव्यों और सब पर्यायों का साक्षात्कारी होने के कारण केवलज्ञान पूर्ण प्रत्यक्ष है। उसकी निरावरणता ज्ञानावरण के विलय से होती है। समस्त द्रव्यों और समस्त पर्यायों को प्रत्यक्ष करने वाला ज्ञान केवलज्ञान है। जीवन्मुक्त योगियों का एक निर्विकल्प अतीन्द्रिय अतिशय ज्ञान हैं जो बिना इच्छा व बुद्धि के प्रयोग के सर्वांग से सर्वकाल व क्षेत्र सम्बन्धी सर्व पदार्थों को हस्तामलकवत टंकोत्कीर्ण प्रत्यक्ष देखता है। इसी के कारण वह योगी सर्वज्ञ कहलाते हैं। स्व

पर ग्राही होने के कारण इसमें भी ज्ञान का सामान्य लक्षण घटित होता हैं। यह ज्ञान का स्वाभाविक व शुद्ध परिणमन है। केवलज्ञान मति आदि क्षायोपशमिक ज्ञानों से निरपेक्ष है, अतः वह एक है। केवलज्ञान को आच्छादित करने वाली मलिनता से सर्वथा मुक्त होने के कारण केवलज्ञान सर्वथा निर्मल–शुद्ध है।

केवलज्ञान प्रथम समय में ही सम्पूर्ण उत्पन्न होता है। अतः वह सम्पूर्ण–सकल है। सम्पूर्ण ज्ञेय पदार्थों को ग्रहण करने के कारण केवलज्ञान को सकल कहा है। असाधारण–केवलज्ञान अनन्यसादृश्य के कारण असाधारण है। अनन्त– केवलज्ञान अतीत प्रत्युत्पन्न एवं अनागत कालीन अनन्तज्ञेयों को प्रकाशित करने के कारण अनन्त है। केवलज्ञान आत्मा का स्वभाव है। वह क्षायिक ज्ञान है। क्षयोपशम से उत्पन्न अवस्थाओ में न्यूनाधिकता होती है पर क्षायिकभाव पूर्ण, अखण्ड एवं सकल होता है, अतः उसमें भेद नहीं होता है।

ज्ञानावरणीय आदि चार धाति कर्मो के क्षय से मनुष्यभव में रहते हुए ही जो केवलज्ञान उत्पन्न होता है, वह भवस्थ केवलाज्ञान है। जब तक चार अघाति कर्म क्षीण नहीं होते, तब तक वह भवस्थ केवलज्ञान कहलाता है। ज्ञानावरणीय कर्म का समूल क्षय हो जाता है तब वह पुनः आत्मा को आवृत्त नहीं कर सकता। अतः तेरहवें गुणस्थान में उत्पन्न केवलज्ञान संसारी (भवस्थ) अवस्था में रहता है और मुक्त अवस्था में भी। तेरहवें गुण स्थान का नाम सयोगिकेवलि गुणस्थान है। संयोगि अर्थात् योग सहित। योग का अर्थ है–प्रवृत्ति। योग तीन हैं– मन, वचन, काय। सयोगि केवली गुणस्थान में केवलज्ञान प्राप्त हो जाने पर भी मन, वचन, काय की प्रवृत्ति चालू रहती है। इस अवस्था में होने वाले केवलज्ञान को सयोगि भवस्थ केवलज्ञान कहते हैं।

चौदहवें गुणस्थान का नाम अयोगिकेवली गुणस्थान है। अयोगि अर्थात् योग रहित। जब मन, वचन और काय की प्रवृत्ति का निरोध हो जाता है तब अयोगि केवली गुणस्थान प्राप्त होता है। इस अवस्था में होने वाला केवलज्ञान अयोगिभवस्थ केवलज्ञान कहलाता है। ज्ञान की दृष्टि से सयोगि और अयोगि भवस्थ में कोई अन्तर नहीं है। अवस्था की दृष्टि से अन्तर होने के कारण

ही भवस्थ केवलज्ञान के ये दो भेद किये गये हैं। जब केवली के भव प्रत्ययिक कर्म क्षीण हो जाते हैं, तब वह सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है।

भारतीय दर्शनों में ज्ञान को सभी ने स्वीकार किया है। ज्ञानमीमांसा का महत्वपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण साहित्य चाहे वह आगम युग में रचित हो या फिर दर्शन युग में, दर्शन युग के प्रत्येक शाखा पर ज्ञानमीमांसा का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ज्ञान दार्शनिकों का मेरूदण्ड़ है। ज्ञान प्रकाश करता है। ज्ञान के बिना चारित्रिक गुणों का विकास नहीं होता। इस प्रकर केवलज्ञान पूर्ण ज्ञान है।